करीरा के किसान महाबीर सिंह ने बागवानी में कमाया नाम
बाजरे के उत्पाद, प्रोसेसिंग द्वारा तैयार कर रहा विभिन्न उत्पाद

डॉ. होशियार सिंह यादव
महेंद्रगढ़ (हरियाणा)

जिला महेंद्रगढ़ के कनीना उप–मंडल का छोटा सा गांव करीरा है जहां यूं तो जिले का एक मात्र नवोदय विद्यालय स्थित है। इसी गांव के एक साधारण किसान महाबीर सिंह ने बागवानी, बाजरे पर आधारित उत्पाद एवं कृषि उत्पादों से प्रोसेसिंग द्वारा उत्पादों के रूप में क्षेत्र में वो सफलता हासिल की कि उन्हें कई बार सम्मानित किया जा चुका है। आज से महज सात वर्ष पहले ही अपना काम शुरू किया और आज बागवानी, बागवानी के साथ दलहन जाति की फसलें उगाकर, केंचुआ पालन करके, ड्रिप सिंचाई, बायो गैस संयंत्र लगाकर, केंचुआ एवं प्याज का शेड बनाकर जिला भर में नाम कमाया है वहीं केंचुआ पालन करने वालों को केंचुआ मुफ्त में प्रदान करके वे दूसरे किसानों के लिए प्रेरणा स्रोत बन गए हैं। वहीं बाजरे से विभिन्न उत्पाद जैसे बिस्कुट, पिज्जा, बर्गर एवं केक आदि बनाकर प्रदेश भर में नाम कमाया है।

आज से करीब सात वर्ष पहले महाबीर सिंह ने बागवानी में अपनी रुचि दर्शाते हुए कई ट्रेनिंग की एवं कैंपों में जाकर ज्ञान हासिल किया। उन्होंने सरकार की ओर से केंचुआ पालन एवं पशु पालन विभाग की ओर से डेयरी की ट्रेनिंग ली। इनका ज्ञान लेने के लिए वे पंजाब, हरियाणा एवं राजस्थान भी गए। तत्पश्चात उनका मन ड्रिप सिंचाई की ओर गया और महाराष्ट्र के जलगांव में जाकर ड्रिप सिंचाई योजना की जानकारी प्राप्त की। जिला महेंद्रगढ़ के वे पहले किसान बने जिन्होंने मिनि स्प्रिंकलर सिस्टम अपने खेत पर स्थापित किया।

पांच वर्ष पहले महाबीरसिंह ने अपनी तीन एकड़ जमीन पर नींबू, बेरी, किन्नू, लेहसुआ, आंवला, बेलपत्र एवं जामुन के पौधे उगाए। इन पौधों के बीच में समय समय पर मूंगफली, मूंग, लहसुन, प्याज एवं मटर उगाकर रबी एवं खरीफ फसल पैदावार से बेहतर आय प्राप्त की। विगत वर्ष बेरी के फल बेर करीब 80 हजार रुपये के बेचकर, इस वर्ष लाखों रुपये कमाने की तैयारी है। नींबू करीब 20 हजार के बेचकर नाम कमाया और दूसरे किसानों को भी यह काम करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने इतना ही नहीं अपितु प्याज के शेड में प्याज एवं लहसुन उत्पाद रखकर विगत वर्ष करीब एक लाख रुपये की प्याज एवं 50 हजार रुपये की लहसुन बेचकर अपने परिवार का भरण पोषण किया। दस से बारह हजार रुपये के मटर उत्पादन किया। उनका कहना है कि सामान्य तौर पर प्रति एकड़ 50 हजार रुपये की फसल पैदावार संभव है किंतु वे पैदावार के मामले में आगे हैं।

बागवानी विभाग की ओर से सहायता मिलने पर उन्होंने देसी बेरी के पौधे उगाए और उन पर उन्नत बेरी की कलम अपने हाथों से चढ़ाकर बेहतर दर्जे के बेर फलों का उत्पादन कर दिखाया। उनका मानना है कि पौधे चार वर्ष के बाद ही पैदावार देते हैं ऐसे में अब पौधों लगातार फल दे रहे हैं। वे नींबू को बाजार में बेचने के अलावा अचार बनाने एवं नीबू के रस को बेहतर पेय में बदलने की विधि से जूस तैयार कर रहे हैं जिसका व्यवसायिक उत्पादन न करके मेहमान नवाजी के लिए प्रयोग कर रहे हैं। उन्हें विश्वास है कि आगामी समय में बेहतर आय हो सकेगी। इस बागवानी के बल पर ही उन्होंने अपने पौधों की देखरेख के लिए दो व्यक्तियों को रोजगार भी प्रदान कर दिया। बेर से कैंडी, आंवला से आंवला के लड्डू, आंवला जूस, एलोवेरा जूस तथा आंवला सैंपू तक बनाकर बाजार में उतारा है।

कृषि विभाग की प्रेरणा से उन्होंने बायो गैस संयंत्र भी लगवाया। इस संयंत्र के लगने से वे अति प्रसन्न हैं। घर में चार से पांच पशु रखते हैं जिनके मलमूत्र को वे बायो गैस संयंत्र में प्रयोग कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि बायो गैस संयंत्र से पांच जनों के परिवार की सभी खाना बनाने, चाय आदि बनाने एवं अन्य कार्यों के लिए बायो गैस पर्याप्त साबित हो रही है।

कृषि विभाग से ट्रेनिंग लेकर महाबीर सिंह ने अपने फार्म पर ही केंचुआ पालन केंद्र स्थापित कर दिया। इस केंद्र से प्राप्त वर्मी कंपोस्ट को उन्होंने अपने खेत में फल, सब्जी एवं फूलदार पौधे उगाने के लिए किया और भारी सफलता मिली। आज भी जिला भर के वे लोग जो केंचुआ पालन केंद्र स्थापित करना चाहते हैं उन्हें वे मुफ्त में केंचुआ दे रहे हैं। इस प्रकार पशुओं के मलमूत्र को बायो गैस संयंत्र में प्रयोग कर रहे हैं वहीं बायो गैस से प्राप्त गोबर में केंचुआ पालन केंद्र स्थापित करके वर्मी कंपोस्ट तैयार किया। कृषि विभाग की ओर से उन्होंने तत्पश्चात प्याज स्टोरेज स्थापित किया। इस स्टोरेज में उन्होंने प्याज रखने एवं खेत से प्राप्त लहसुन को रखने का काम करके आय प्राप्त की।

खेत में बागवानी के लिए ड्रिप सिंचाई योजना को अपनाया। इस विधि से कम पानी खर्च होता है और जो भी पानी खर्च होता है वह सीधे रूप से पौधों को प्राप्त हो रहा है। इतना कुछ होते हुए भी महाबीर सिंह खुश नहीं हैं। उनका कहना है कि किसान आयोग स्थापित किया जाए जो किसानों के हितों की देखरेख करेगा। उन्होंने विभिन्न शीर्ष नेताओं को तथा मंत्रियों को भी इस संबंध में पत्र प्रेषित किया है।

उनके खेत में आधुनिक तरीके से की गई कृषि, फूलों की खेती, एवं उगाई गई सब्जियों में वर्मी कंपोस्ट एक बेहतर किसान की ओर इंगित करती है। उन्होंने अपने खेत में ही शोध केंद्र स्थापित किया हुआ है। किसान उनसे अब प्रेरणा ले रहे हैं। वे बेझिझक उन्हें कृषि की नई तकनीकों की जानकारी देते हैं।

किसानों की आय का स्रोत है–बेर

करीरा गांव का सामान्य किसान महाबीर सिंह मिश्रित कृषि करके कभी से नाम कमाता आ रहा है किंतु अब उन्होंने बेरों की बेहतर क्वालिटी लगाकर सिद्ध कर दिया है कि इस क्षेत्र में बेरी के पौधे लगाकर भी एक लाख रुपये प्रति एकड़ में अकेले बेर उत्पादन से कमा सकते हैं। वे दूसरों के लिए एक उदाहरण बनकर सामने आए हैं।

एक एकड़ में बेरी, लेहसुआ, जामुन, बेलगिरी, नींबू तथा दूसरे फलदार पौधे उगाकर न केवल बागवानी को बढ़ावा दे रहे हैं अपितु इन फलदार पौधों के नीचे मटर, दलहन, लहसुन, प्याज, चना, आलू तथा दूसरी फसलें उगाकर किसानों को नई राह दिखा रहे हैं। केंचुआ पालन, फसल उत्पाद स्टोर आदि का काम भी कर रहे हैं।

आश्चर्यजनक पहलु हैं कि उन्होंने अपने खेत में करीब एकसौ बेरी के पौधे उगा रखे हैं। इन पौधों पर 60 ग्राम प्रति बेर वजनी बेर पैदा कर दिखलाए हैं जिन्हें देखने के लिए किसान आ रहे हैं। उन्होंने बताया कि हर वर्ष शिवरात्रि के दिन बेरों की अधिक मांग के दृष्टिगत और भी अधिक मोटे एवं वजनी बेर तैयार करने की फिराक में हैं। किसान महाबीर सिंह ने कहा कि प्रतिदिन करीब 80 किलो ग्राम बेरों का उत्पादन होता है और वे चुन–चुनकर बेर बाजार तक ले जाते हैं जिनकी बाजार में भारी मांग है।

किसान ने बताया कि इन बेरों की देखरेख अधिक चाहिए। अकेले बेरों से वे प्रतिवर्ष एक लाख के करीब राशि कमा लेते हैं किंतु गुड़ाई, स्प्रे, उर्वरक के अलावा देखरेख करने वाले पर 30 से 40 हजार रुपये खर्च करने पड़ते हैं।

उन्होंने अपने बेरों को प्रदर्शनी में भी प्रदर्शित किया तथा नाम कमाया। करीरा गांव में स्थापित हरियाणा का दूसरा बाजरे पर आधारित प्रसंस्करण करने वाला लघु उद्योग कोरोना की मार झेलते हुए कुछ दिनों के लिए बंद हो गया था वह फिर से नाम कमाने लगा है। बाजरे से दलिया, बिस्कुट, पिज्जा, फैन तथा केक फिर से उत्पादित करने शुरू कर रखे हैं। इसकी दूसरी इकाई का उद्घाटन भी मंत्री ओमप्रकाश यादव ने किया था। वहीं कृषि विश्वविद्यालय हिसार की टीम भी गत दिनों यहां दौरा कर चुकी है। ग्रामीण क्षेत्र में भी यह नाम कमा रहा है।

वास्तव में इस प्रकार का उद्योग हरियाणा में दूसरा है तथा राजस्थान में एक केंद्र पर इस प्रकार के उद्योग चल रहे हैं। ललित और ज्योति द्वारा स्थापित करीरा के लघु उद्योग को दिशा निर्देश प्रगतिशील किसान महावीर सिंह दे रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि 24 अक्टूबर 2020 को मंत्री ओम प्रकाश यादव एडीओ ने इस लघु उद्योग का उद्दघाटन किया था, तब से बाजरे के प्रति लोगों में रुझान पैदा कर दिया था। बर्गर और पिज़्ज़ा तक भी बनाए जाने लगे थे लोगों की पसंद बाजरा बन गया था। बाजरे के बिस्कुट, केक वगैरा खाने शुरू कर दिए थे किंतु दुर्भाग्यवश कोरोना काल में कुछ दिनों तक काम बंद कर दिया गया था। एक बार फिर से काम जारी है। यहां पर 20 मिनट में दो ट्रे अर्थात करीब 1 किलोग्राम बिस्कुट तैयार हो रहे हैं जो 170 से 180 डिग्री पर बनते हैं। ललित कुमार और ज्योति ने बताया कि जो लोग गेहूं को अधिक पसंद करते थे और बाजरा सर्दियों में भी खाने से डरते थे उनके लिए बाजरे के बिस्कुट एक प्रमुख पसंद बन गई है। चाय के साथ या बिना चाय के साथ लोग बाजरे से बने हुए पदार्थ खा रहे हैं। इस प्रकार का उद्योग कृषि विश्वविद्यालय हिसार में पहले स्थापित है वहीं राजस्थान में भी एक केंद्र पर इसके तत्पश्चात बाजरे पर आधारित करीरा में यह केंद्र स्थापित हुआ था। बाजरा अनेक पदार्थों से पौष्टिक तत्व है जिसमें कोलस्ट्राल कम होता है तथा लोहे की मात्रा अधिक पाई जाती है। बाजरा खाने से शरीर स्वस्थ रहता है किंतु बाजरे को लोग कम खाते थे। क्षेत्र में बाजरा पर्याप्त मात्रा में होता है। किसान अपने खेत का बाजरा ही प्रयोग कर रहा है। इसलिए उनका रुझान पैदा करने के लिए यह केंद्र स्थापित किया गया है। इस क्षेत्र में भी महाबीर सिंह ने बेहतर नाम कमाया है।

विभिन्न उत्पाद प्राप्त कर कर रहे हैं बिक्री

महाबीर सिंह किसान ने अपने घर को ही लघु उद्योग में बदल दिया है। घर पर खेत से उत्पन्न विभिन्न फल एवं सब्जियों को प्रोसेस करके कई उत्पाद बनाता आ रहा है। लहसुन से प्राप्त फलों का अ चार, बेर की कैंडी, आंवला का अचार, जूस, मुरब्बा, आंवला लड्डू सैंपू, नींबू से अचार, नींबू रस सहित दर्जनों उत्पाद बनाकर मार्केट तक पहुंचाने का काम कर रहे हैं। उनके आंवला के लड्डू विभिन्न प्रदर्शनियों में इनाम पा चुके हैं। सरकार ने भी उन्हें अग्रणी किसान की संज्ञा देकर पुरस्कृत किया हुआ है। महाबीर किसान की मदद उनका पूरा परिवार ही कर रहा है जिसके चलते ग्रामीण किसान देश में नाम कमा रहा है। विभिन्न अधिकारी एवं किसान उनके पास आते रहते हैं।

हिंदी विश्व की सर्वाधिक सम्पन्न भाषा संस्कृत की ज्येष्ठ पुत्री है।

(आचार्य विनोबा भावे)